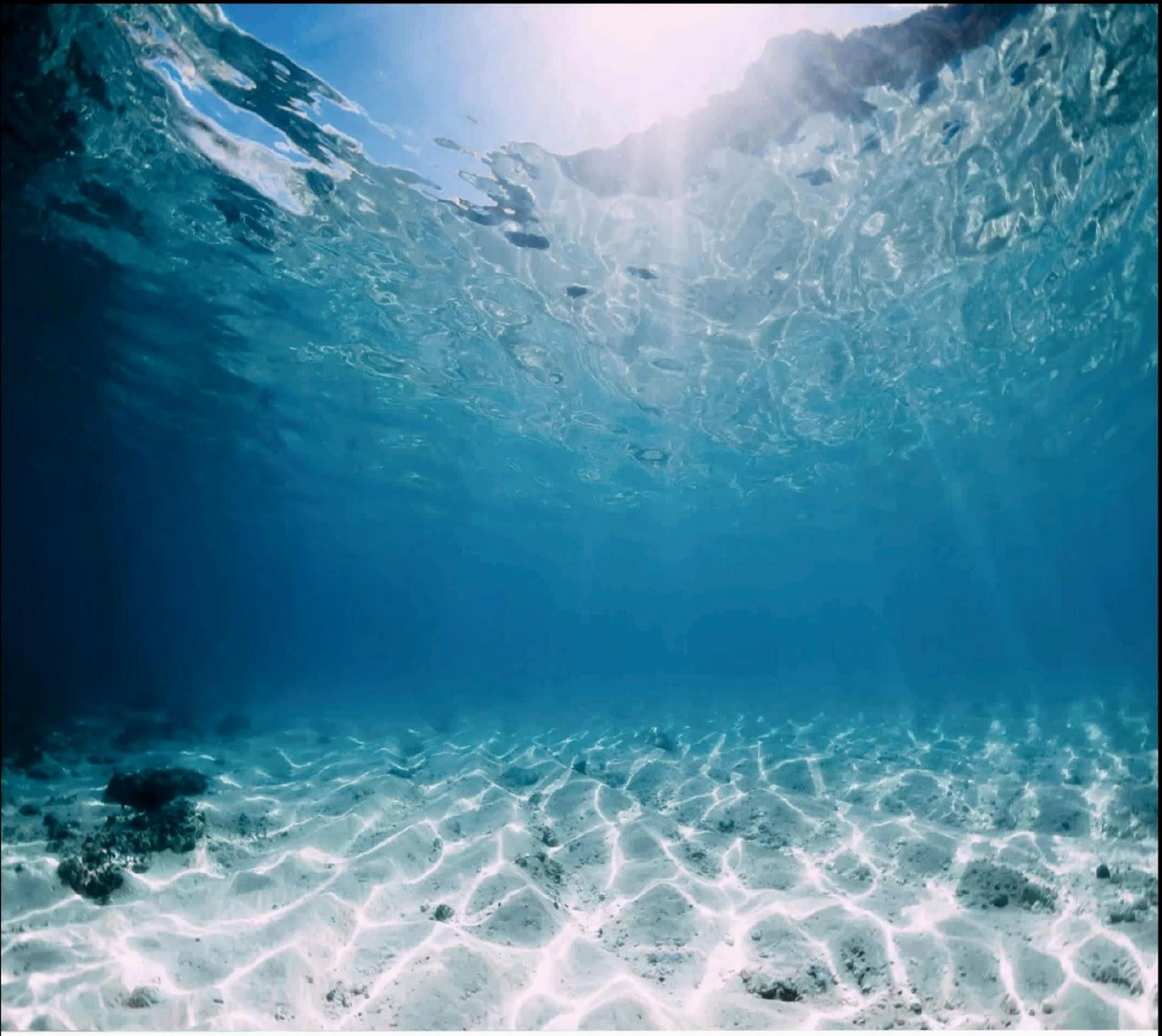

गहरे पानी पैठ

श्री. विश्वमोहन कुमार सिंह

कृपा - दृष्टी प्रकाशन

शीर्षक: **गहरे पानी पैठ**

लेखक: **श्री . विश्वमोहन कुमार सिंह**

1st Edition

ISBN: **978-81-19149-70-4**

Published: **May 2024**

Publisher:

Kripa-Drishti Publications

A/ 503, Poorva Height, SNO 148/1A/1/1A,
Sus Road, Pashan- 411021, Pune,
Maharashtra, India.
Mob: +91-8007068686
Email: editor@kdpublications.in
Web: https://www.kdpublications.in

© **Copyright** श्री . विश्वमोहन कुमार सिंह

All Rights Reserved. No part of this publication can be stored in any retrieval system or reproduced in any form or by any means without the prior written permission of the publisher. Any person who does any unauthorized act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages. [The responsibility for the facts stated, conclusions reached, etc., is entirely that of the author. The publisher is not responsible for them, whatsoever.]

गहरे पानी पैठ

<u>लेखक</u>

श्री • विश्वमोहन कुमार सिंह

भूत°प्राचार्य सीएम कॉलेज, दरभंगा
भूत°सदस्य, बिहार लोकसेवा आयोग
भूत°वाइसचांसलर, बिहार वि.वि.
भूत°वाइसचांसलर, मगध वि.वि.

<u>भूमिका लेखक</u>

पद्मश्री उषाकिरण ख़ान
वरिष्ठ साहित्यकार.

<u>परिचय</u>

भूत°असो. प्रो राजीव कुमार सिन्हा
ग्रिफ़िथ वि. वि, आस्ट्रेलिया

<u>A tribute</u>

Grandchildren of Bishwamohan Kumar Sinha

<u>Acknowledgement</u>

Prasoon Kumar Sinha

कृपा-दृष्टी प्रकाशन, पुणे.

भूमिका
सर्वश्री डॉ. विश्वमोहन कुमार सिन्हा

यह पुस्तक डॉ. विश्वमोहन कुमार सिन्हा, जो कि डॉ. बी°एम° के सिन्हा के नाम से जाने जाते थे का एक प्रकार से एकालाप है। प्रोफेसर सिन्हा सी°एम° कॉलेज दरभंगा में अंग्रेज़ी साहित्य के यशस्वी प्रोफेसर एवं प्रिंसिपल थे। तत्पश्चात् वह बिहार विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर बने। वह मगध विश्वविद्यालय के प्रथम वाइस चांसलर थे। रिटायरमेंट के बाद पाटलिपुत्र कॉलोनी के स्वअर्जित आवास 99, नं. में रहते थे। वह विशाल मकान उनके स्वयं के बाल-बच्चों द्वारा आबाद था। वह प्रायः किराया नहीं लगाते थे परंतु हमें उसकी जरूरत थी। रामचंद्र जी, उनके सबसे बड़े पुत्र समीर सिन्हा यशोलब्ध इंजीनियर साहब की मित्रता के सहारे हम उन तक पहुँचने में कामयाब हुए। यह एक नया सान्निध्य था। जबकि हमारा एक पुराना आत्मीय संबंध था। मेरे पिता के अनन्य मित्र दरभंगा के कटहलबाड़ी के रामेश्वर प्रसाद सिन्हा विख्यात एडवोकेट (क्रिमिनल) की बहन इनकी धर्मपत्नी थीं। रामेश्वर बाबू मेरे ससुरजी के भी फ्रेंड फिलॉसफर एंड गाइड हो गए। यहाँ मैं कांग्रेस के नेता रामेश्वर प्रसाद सिन्हा के विषय में कहने चलूँ तब बहक जाऊँगी। रामेश्वर बाबू मंत्री भी हुए थे। शायद भोला पासवान शास्त्री के मंत्रिमंडल के मंत्री हुए। उनका विवाह वैशाली के संगीतज्ञ परिवार में हुआ था। पत्नी के एक भाई वृष्णि पटेल हैं। मैं दो-चार दिन बचपन में चाची से सितार सीखने कटहलबाड़ी गई भी, पर वह मेरे जैसी बंडल बच्ची के वश का रोग न था। मैं जब 99, पाटलिपुत्र कॉलोनी में आई तब मेरी कहानियाँ धर्मयुग में छपने लगीं। बी°एम°के° सिन्हाजी ने कहानी पढ़ी और मुझे बुलाया। खूब प्रोत्साहन दिया। अपना कहानी-संग्रह मुझे पढ़ने को दिया। हिन्दी कहानियाँ छोटी-छोटी एवं कसी हुई आधुनिक भावबोध की थीं। लेखन के कुछ प्रारंभिक प्रकाशित कृतियों पर 99, पाटलिपुत्र छपा अब भी मिलता है तब सिन्हा साहब का हाथ सर पर रहता। उनकी बेटी डॉ. आशा सिन्हा के बच्चे, जो मेरे बच्चों के साथी थे, उन्हें नानाजी कहते। वहीं उनके बेटों के बच्चे जो मेरे बच्चों के मित्र थे वे उन्हें दादाजी कहते।

हमारा घर एक परिवार रहा उनकी पत्नी साप्ताहिक कीर्तन में जातीं। कीर्तन, कभी-कभी उनके घर में भी होता। कई बार मैं उनके साथ बैठी हूँ। मेरी रुचि न रहने पर भी मैं जरूर रहती थी। इससे कई नए अनुभव जुड़ गए।

मैं मन ही मन आश्चर्य से भर जाती कि बड़े से ड्रॉइंग रूम में कीर्तन होता और अत्यंत असिजात सिन्हा साहब सांख्य पुरूष की तरह बरामदे में बैठे रहते। आज यह डायरी पढ़कर सहसा उनका वह स्थितिप्रज्ञ रूप याद आ गया। सिन्हा साहब स्वयं आध्यात्मिक व्यक्ति थे। पूरी डायरी परमपिता की जगज्जनी की खोज को समर्पित है। उन्होंने अपने संकटों को याद किया है कि कैसे छोटे-से बालक थे तभी पिता का साया सर से उठ गया, छोटे भाई-बहन थे। सबका दायित्व इन पर है यह समझते थे। येन-केन-प्रकारेण बहन की शादी और भाई की शिक्षा का प्रबंध स्वयं कर लिया। जीवन के उत्तरार्द्ध में संतुष्ट तो थे कि उन्होंने एक बड़ी मंज़िल तलाश ली, राह चाहे जितनी अधिक कंटकाकीर्ण हो। जीवन है तो दुख और सुख भी हैं। बड़ी बेटी जो स्वंय डॉक्टर थी पतिविहीन हो गई। एक पुत्रवधू चली गई। सिन्हा साहब ने धैर्य से सब आत्मसात कर लिया। उन्होंने जगदंबा पर आसक्ति को अपना संबल बना लिया। यह डायरी प्रकाशित हो तो लोकोपयोगी होगी। संघर्षशील लोगों को रास्ता मिलेगा और मिलेगी ताकत।

प्रो. सिन्हा की मानविक साधना, परदुखकातरता ने उन्हें पूर्णरूपेण आध्यात्मिक बना डाला था। यह अनुभव अत्यंत सुकूनदायी रहा। उनकी यह पुस्तक प्रकाशित हो ऐसी आकांक्षा उनकी संतान के साथ मुझे भी है। यह सुखद है कि देश-विदेश को अंग्रेज़ी पढ़-पढ़ाकर इन्होंने साहित्य सदा हिन्दी में ही लिखा।

– उषाकिरण खान

वरिष्ठ साहित्यकार

परिचय

ये प्रस्तुति मेरे बाबूजी (फादर इन लॉ) माननीय शैक्षिक विद्वान स्व. श्री विश्वमोहन कुमार सिन्हा की नवीनतम साहित्यिक रचना "गहरे पानी पैठ" के लिए है, जो एक विद्वान की लम्बी और रोमांचित यात्रा का प्रतिबिंब है।

मैं अपने बाबूजी की इस सरंचना को बहुत ही गर्व के साथ आगे प्रस्तावित कर रहा हूँ जो उनके जीवनकाल की गहरी बौद्धिक और शैक्षिक यात्रा का एक प्रमाण है। ये रचना ज्ञान के प्रति उनका अटूट समर्पण, शिक्षा के प्रति आजीवन प्रतिबद्धता और उनके जीवन के अनुभव को दर्शाता है। बाबूजी के उच्च विचार और सोच, हमेशा से ही मेरा मार्गदर्शन करते रहे हैं। उनसे मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला है और उन्हीं की विचारधाराओ से प्रेरित होकर मैंने भी पुस्तकें और विज्ञान के विषय पर लिखा है।

उनका जन्म 1902 में बिहार के छपरा ज़िले में हुआ था। उन्होंने पटना कॉलेज से 1924 में एम.ए. इन इंग्लिश, एम. ए. इन ओल्ड इंग्लिश की पढ़ाई की और लॉ कॉलेज पटना से बी.ऐल. की पढ़ाई की। अपने एकेडेमिक करियर की शुरुआत उन्होंने पटना के बी.एन. कॉलेज से व्याख्याता के रूप में की थी।

1933 में वह आगे की पढ़ाई के लिए किंग्स कॉलेज, लंदन गए। 1936 में लंदन वापसी के बाद उनकी नियुक्ति सीएम कॉलेज, दरभंगा में प्रधानाचार्य के तौर पर हुई। आगे जाकर, 1956 में उन्हें BPSC (बिहार लोक सेवा आयोग) का सदस्य नियुक्त किया गया।

तत्पश्चात् 1965 में उन्हें बिहार यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर के रूप में नियुक्त किया गया था और उन्होंने बिहार यूनिवर्सिटी को नए अधिनियमों से परिचित कराया था। उनकी इस उपलब्धि से बिहार के शिक्षा प्रणाली में बदलाव आया। इस बदलाव के दौरान, विश्वविद्यालयों में व्याख्याता के पद के आवेदन के लिए पीएच.डी. की योग्यता अनिवार्य की गई थी। उनकी उपलब्धियों की वजह से उन्हें 1967 में बिहार सरकार के द्वारा, मगध यूनिवर्सिटी का वाइस चांसलर बनाया गया। फिर भारत सरकार ने उन्हें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का डायरेक्टर नियुक्त किया।

हिन्दी हो या अंग्रेज़ी, दोनों ही भाषाओं पर उनका बराबर का कमांड था। अपने जीवनकाल में उन्होंने कई पुस्तकें लिखी। उनके अनेकों लेख विभिन्न पत्रिकाओं एवं समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए।

उनके द्वारा लिखित ख़ास पुस्तकों में से तीन पुस्तकें अंग्रेज़ी में हैं और सात पुस्तकें हिन्दी भाषा में।

बाबूजी स्वभाव से सरल, निर्भीक, कर्मठ एवम् दूरदर्शी होने के साथ साथ जिज्ञासु, यथार्थवादी और धार्मिक प्रवृति के थे। यह पुस्तक उनके जीवन की कुछ जिज्ञासाओं को खोजने की उत्सुकता को दर्शाती है। इसमें उन्होंने भगवान में अपनी आस्था से जुड़े जीवन के कुछ तथ्यों की भी विवेचना की है।

उनकी अंतिम रचना "गहरे पानी पैठ" के लिए यह प्रस्तावना लिखने में स्वयं को सम्मानित महसूस कर रहा हूँ। मैं उनके लिए अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

साथ ही, मैं उनके बड़े बेटे श्री समीर कुमार सिन्हा, जो मेरे बड़े भाई की तरह हैं, उनका धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने अपने पिता द्वारा लिखित इस पुस्तक को प्रकाशित करने में कड़ी मेहनत की और इस प्रस्तावना को लिखने का अवसर मुझे दिया। उनके आदर्श, आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणादायक और मार्गदर्शक रहेंगी। बाबूजी हमेशा हमारे दिलों में जीवित रहेंगे। समस्त सिन्हा परिवार की तरफ़ से उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पण करते हुए उन्हें हम सभी का शत-शत नमन।

–भूत° असो.प्रो राजीव कुमार सिन्हा
ग्रिफ़िथ वि.वि आस्ट्रेलिया

ऊँ असतो मा सदगमयः।
तमसो मा ज्योतिर्गमय:।।
मृत्योमर्मृतम गमय:।
ऊँ शान्ति शान्ति शांति:।

A Tribute

Our Dadajee/Nanajee, late Shri Bishwamohan Kumar Sinha, has always been a role model for us and will continue to inspire us. We remember him with great fondness and admiration for what he stood for and what he meant for the entire 99 Patliputra family.

His integrity was well known, and we are all proud of what he stood for! Wish that we had the courage to follow his path. He had quite a challenging financial journey, right from the story of how he went to King's College, London, how he acquired 99 Patliputra, how he educated and married off his children et al. We, all his grandchildren are indebted to him for his sacrifices and the foundation that he built over which we are flourishing. Despite his financial situation, he never ever got distracted even a bit from his core value of Integrity, though he does write of opportunities on the way– but he never wavered. His ambition was never to be rich, but to reach the pinnacle of professional achievement, which he did.

Despite his very humble beginnings, he had the courage to dream big with his deep belief in God to guide and show him a path to achieve them. He used to narrate stories about how he walked a few kilometers in his village to find a lamp post near a railway station to study at night, and here we are today where we have no tolerance to be without electricity even for a moment. The tenacity and the never give up attitude are traits which we will all remember and learn or rather imbibe in ourselves. He dreamt big and his belief in God was unwavering.

He has been single handedly responsible for where the entire 99 Patliputra family stands today. He ensured that all his sons and daughters were provided with the best education, which gave us, his grandchildren, a fantastic platform to build upon– we have been the haves, and we owe to

him. It would be the greatest tribute to him, if we, the 99 Patliputra family, be inspired by his courage, integrity, tenacity and to be what he stood for.

Reading his journey in search of God, it comes across that prior to him becoming an educationalist, he had a deep desire to be appointed to the Indian Civil Services as his first career choice. However, he does write that in those days, it was only based on great references that one could have been appointed– he tried to find such people, which included a cook of an Englishman, but it did not work. Though he was disappointed, he didn't give up, and he continued his pursuit to make a name for himself in the field of education.

To be humble has been another trait which has been so inspiring. Despite his achievement, we never ever experienced any bit of arrogance, his feet were always well grounded, never forgetting his humble beginnings. He was one person who looked for mistakes inside him rather than look outside to blame others, he took ownership to life like no one else.

We will always remember you with great love and respect Dadajee/Nanajee!

– Grandchildren of Bishwamohan Kumar Sinha

Acknowledgement

The publication of this book would not have been possible if my father Sri Samir Kumar Sinha, the eldest son of Sri Bishwa Mohan Kumar Sinha had not taken upon himself to get it published as his shradhanjali to his father. Despite his failing health, he went on to dig out the manuscript, coordinate to search for a publisher, get the manuscript typewritten, get it proofread and finally ensure that it is printed and published.

Mr Rajiv Kumar Sinha, son-in-law and Mrs Neelam Sinha, daughter of Sri Bishwa Mohan Kumar Sinha have been key supporters in this effort. Mr Malay Kumar Sinha, grandson of Dadajee was instrumental in getting the proofreading done through Ms Richa Kharkwal of Rukh Publications, Delhi. Dr Babita Sinha, granddaughter of Dadajee was of immense help in arranging for the initial proofreading. Since my father is in Sydney, my younger brother Pranoy Kumar Sinha extended all logistical support.

Dr. Ushakiran Khan, who wrote the introduction to this book, had known Dadajee for a long time and was an admirer of his literary achievements. It was very sad that she passed away two months ago.

Lastly, all this would not have been possible without the support of Mrs Rajani Ambadas Adam, publisher of the book in getting the book printed and published.

I also acknowledge the contributions of others whose names I may have missed to mention.

Prasoon Kumar Sinha
Grandson of Sri Bishwa Mohan Kumar Sinha

श्री . विश्वमोहन कुमार सिंह

हिन्दी रचनाएँ :
१.जीवन तट (उपन्यास)
२.जीवन लहरी (")
३.मुक्ता के दाने (कहानी संग्रह)
४.मुक्ता की लड़ी (")
५.काव्य और कवि (साहित्यिक आलोचना)
६.खिलौना घर। (अनुवाद)
७.मेरी दुनिया (लेख संग्रह)

अंग्रेज़ी रचनाएँ :
१.वाइसचांसलर ऐट वर्क
२.एम्बलेम ऑफ़ ब्यूटी
३.टुवर्ड्स लाइट

जीवन वृक्ष :
जन्म - मार्च 1902
जन्मस्थान - ग्राम - सज्जनपुर (सारण ज़िला)
पिता -श्री गोविंद प्रसाद सिंह
शिक्षा : बी.ए -
टी.ऐन.जे.कॉलेज.भागलपुर -1921
एम.ए (इंगलिश)-पटना कॉलेज-1923
एमए (ओल्ड इंग्लिश)-पटना कॉलेज-1924
बी.एल -पटना वि.वि -1924
बी.ए (आनर्स) किंग्स कॉलेज,लंदन वि.वि, लंदन-1933 से 1936

सेवाऐ -
सदस्य लोकसेवा आयोग,बिहार
वाइसचांसलर बिहार वि.वि
वाईसचांसलर मगध वि.वि

KRIPA DRISHTI PUBLICATIONS

कृपा - दृष्टी प्रकाशन
ए -503 पुर्वा हाइट्स, पाशान - सुस रोड, साई चौक के पास,
पुणे – 411021, महाराष्ट्र, भारत.
मोबाईल: +91 8007068686
ईमेल: editor@kdpublications.in
वेब: https://www.kdpublications.in

ISBN: 978-81-19149-70-4